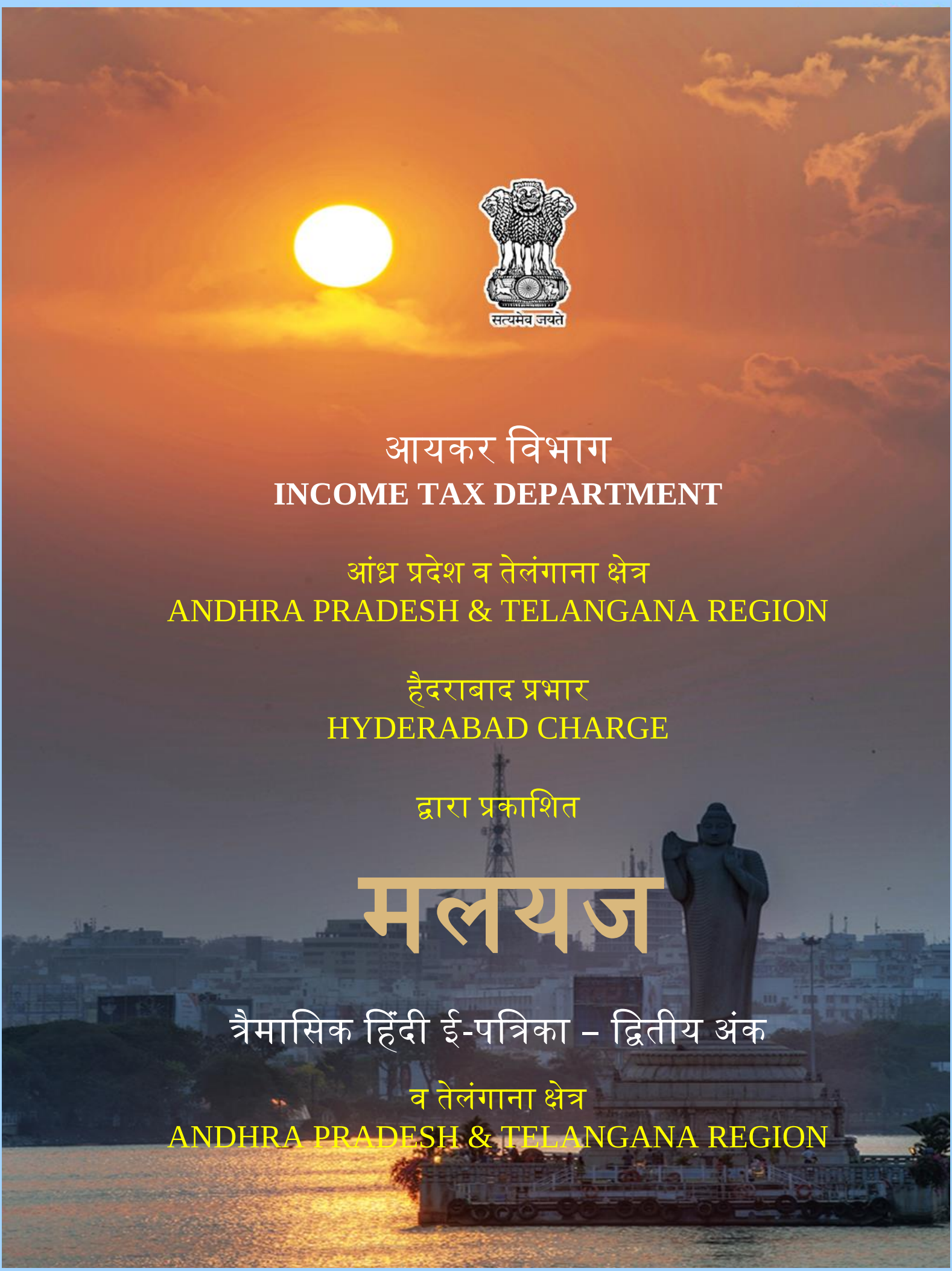

आयकर विभाग

INCOME TAX DEPARTMENT

आंध्र प्रदेश व तेलंगाना क्षेत्र

ANDHRA PRADESH & TELANGANA REGION

हैदराबाद प्रभार

HYDERABAD CHARGE

द्वारा प्रकाशित

मलयज

त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका – द्वितीय अंक

व तेलंगाना क्षेत्र

ANDHRA PRADESH & TELANGANA REGION

<u>संरक्षक</u>

श्री पी. श्रीधर, भा.रा.से.

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना

<u>सह-संरक्षक</u>

डॉ. आर.के. पालीवाल, भा.रा.से

आयकर महानिदेशक (अन्वे.), हैदराबाद

श्री अतुल प्रणय, भा.रा.से.

मुख्य आयकर आयुक्त, हैदराबाद

<u>प्रधान संपादक</u>

श्री पीयूष सोनकर, भा.रा.से.

आयकर आयुक्त (मुख्या. व करदाता सेवाएं) एवं राजभाषा अधिकारी

<u>संपादक मंडल</u>

श्री रवि कुमार,

उप निदेशक (राजभाषा), हैदराबाद

श्रीमती ममतारानी साहू

उप निदेशक (राजभाषा), हैदराबाद

श्री सुनील कुमार विभूते

सहायक निदेशक (राजभाषा), हैदराबाद

<u>संपादकीय सहयोग</u>

श्रीमती के. गिरिजा वाणी

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

श्री मोहम्मद सुल्तान

हिंदी आशुलिपिक

श्री अनिल कुमार मीना

हिंदी आशुलिपिक

संपर्क हेतु : e-mail id : hyderabad.ad.ol@incometax.gov.in

अनुक्रमणिका

आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना क्षेत्र, हैदराबाद प्रभार

क्र.सं.	लेख/कविता	रचनाकार /कवि का नाम श्री / श्रीमती /कुमारी
1.	गांधी विचार की वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ.आर.के.पालीवाल, आयकर महानिदेशक (अन्वे.),हैदराबाद
2.	सृष्टि का सूत्रधार	डॉ. राजेंद्र कुमार, आयकर आयुक्त, हैदराबाद
3.	नकाब रात के चेहरे से	श्रीमती शालिनी भार्गव कौशल, आयकर आयुक्त, हैदराबाद
4.	कौन बता सकता	श्री वाल्मिकी शरण ज्योति, आयकर अधिकारी. विशाखा.
5.	दिल की आवाज़	श्रीमती शकुंतला गुप्ता, माता श्री किरण गुप्ता, कार्यालय अधीक्षक, विशाखा.
6.	राष्ट्र भाषा हिन्दी	श्री के. हर्षवर्धन, भाई जयंती दिव्या, कर सहायक
7.	ट्रैफिक एंथम	श्री कमर आलम ख़ान, कर सहायक
8.	कविता – रोती है आज बेटियां	श्री कृष्ण कुमार मीना, आशुलिपिक
9.	प्यारी बिटिया	श्री शंकर मीना, आशुलिपिक
10.	विभागीय उपलब्धियाँ	--

मलयज ई-पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

गांधी विचार की वर्तमान प्रासंगिकता

डॉ.आर.के.पालीवाल
आयकर महानिदेशक (अन्वे.), हैदराबाद

गांधी विचार की वर्तमान प्रासंगिकता पर जब भी कोई विचार विमर्श होता है मेरे जेहन में दो घटनाएं कौंधती हैं - एक गांधी द्वारा अपनी हत्या के कुछ दिन पहले दिया वह बयान जिसमें उन्होंने आजाद भारत में अपने दायित्वों और अधूरे कार्यो के बारे में बताया था, और दूसरी घटना 2004 की है जब मुझे एक आत्मीय वार्तालाप में बाबा आम्टे ने इस विषय पर अपने विचार बताए थे। इस लेख में सबसे पहले भूमिका के रूप में इन दो घटनाओं को ही दोहराना चाहता हूं क्योंकि इन दोनों घटनाओं से गांधी विचार की वर्तमान प्रासंगिकता समझने में मुझे बहुत मदद मिली है।

1947 में जब देश आजाद हुआ तब देशवासियों को ऐसा महसूस होने लगा था मानो अंग्रेजी शासन के कारण ही देश में तमाम समस्या थी और उनके जाते ही राम राज्य जैसी स्थिति हो जाएगी। हालांकि आजादी की पूर्व संध्या पर पंजाब और बंगाल के भयंकर साम्प्रदायिक दंगों ने आजादी की नई नींव की चूलें ही हिलाकर रख दी थी। गांधी ने इस हालत में दिल्ली में आजादी के महा जश्न में शिरकत करने की बजाय बंगाल में भड़के भयावह दंगों को रोकने को वरीयता दी थी। वे यह भी भांप रहे थे कि आजादी के बाद का भारत भी बहुत सारी समस्याओं से घिरा रहेगा इसीलिए उन्होंने तत्कालीन कांग्रेस को भंग कर कांग्रेसियों को सलाह दी थी कि वे सत्ता का मोह छोड़कर देश सेवा के रचनात्मक कार्यों में लग जाएं। यह कमोबेश वही रचनात्मक कार्य थे जिन्हें गांधी और उनके सहयोगी स्वाधीनता संग्राम आंदोलन के दौरान बहुत साल से करते आए थे।

आजादी के समय भी अधूरे रह गए रचनात्मक कार्य गांधी को आजादी से भी ज्यादा प्रिय थे, इसीलिए वे अक्सर कहते थे कि आजादी के पहले देश की जनता को आजादी अक्षुण्ण रखने के लिए जागरूक करने की जरूरत है। इसी पृष्ठभूमि में एक प्रश्न के उत्तर में गांधी ने कहा था कि आजादी के बाद भी हमें बहुत काम करना है क्योंकि अंग्रेजी शासन हटने से देश को केवल एक चौथाई (राजनीतिक) आजादी मिली है। अभी हमें देशवासियों के लिए तीन चौथाई आजादी अर्थात सामाजिक आजादी, आर्थिक आजादी और धार्मिक या आध्यात्मिक आजादी अर्जित करनी है। गांधी का इशारा समाज में फैली - छुआछूत और जातिवाद, देश के गांवों में पसरी भयंकर गरीबी और विभिन्न धर्म और संप्रदायों के बीच फैली नफरत की आग की तरफ था। गांधी के इस कथन को ध्यान में रखते हुए देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि आज भी गांधी के विचार हमारे देश और समाज के लिए उतने ही जरूरी हैं जितने आजादी के समय थे। धार्मिक उन्माद जैसे कुछ मामलों में तो हालात दिन ब दिन बदतर हुए हैं। इसलिए गांधी विचार की प्रासंगिकता भी बढ़ गई है।

2004 में मुझे बाबा आम्टे से उनके आश्रम आनन्द वन में एक आत्मीय वार्ता का अवसर प्राप्त हुआ था। उन दिनों उनकी तबियत काफी नासाज थी लेकिन यह मेरा सौभाग्य था कि उस दिन वे कुछ बेहतर महसूस कर रहे थे जो मेरे साथ करीब आधा घण्टा गुफ्तगू कर सके। उन दिनों मुझे भी गांधी विचार का वैसा

अहसास नहीं था जैसा बाद के वर्षों में हुआ। मैंने बातों बातों में उनसे पूछा था - आने वाले समय में गांधी विचार की क्या प्रासंगिकता रहेगी। जैसे ही बाबा से यह प्रश्न किया उनकी आंखों में चमक बढ़ गई और बिना पलक झपके उन्होंने तुरंत कहा - जिस तरह से विश्व तेजी से हिंसा की तरफ बढ़ता जा रहा है वैसे ही आने वाले समय में पूरे विश्व को गांधी विचार की आवश्यकता और शिद्दत से महसूस होगी। बाबा आम्टे ने जिस आत्म विश्वास के साथ यह कहा था उस पर मैंने उस दिन भी संदेह नहीं किया था क्योंकि बाबा जैसे संत के अनुभव से उपजे ज्ञान पर अविश्वास का कोई कारण नही हो सकता। आज तो मैं भी उसी आत्मविश्वास के साथ यह कह सकता हूं कि आगामी वर्षों में गांधी विचार की प्रासंगिकता और ज्यादा बढ़ेगी क्योंकि विश्व के आधुनिक महान चिंतकों में अकेले गांधी ही ऐसे चिंतक दिखते हैं जिन्होंने हमारे समय की तमाम समस्याओं और चिंताओं पर समग्रता से चिंतन मनन किया है और उनका अहिंसक समाधान करने की हर सम्भव कोशिश की है।

गांधी विचार की वर्तमान प्रासंगिकता पर एक और प्रत्यक्ष प्रमाण याद आ रहा है। बॉम्बे सर्वोदय मंडल के एक छोटे से कमरे से वरिष्ठ गांधीवादी तुलसीदास सौमैया जी अपने युवा सहयोगी राजेश के साथ मिलकर वर्धा आश्रम और जलगांव के जैन गांधी संस्थान की सहायता से गांधी विचार के प्रचार प्रसार के लिए mkgandhi.org नाम से एक वेबसाइट का संचालन करते हैं।कहने के लिए यह एक सादगीपूर्ण साइट है जिस पर कोई खासताम झाम नही है लेकिन कुछ ही साल में तेजी से यह वेबसाइट संभवतः गांधी विचार की सबसे बड़ी वेबसाइट बन गई। इस साइट को अब तक विश्व के दो सौ से ज्यादा देशों के दो करोड़ से अधिक लोगों ने गांधी विचार को जानने समझने के लिए न केवल देखा है बल्कि गांधी के प्रति अपने भावों को भी अभिव्यक्ति दी है। बिना किसी विज्ञापन या प्रचार के इस वेबसाइट का तेजी से विश्व में लोकप्रिय होना यह साबित करता है कि विश्व भर में प्रबुद्ध वर्ग गांधी विचार की तरफ बहुत ध्यान और उम्मीद से देख रहा है।

कुछ साल पहले मुझे वर्धा आश्रम में तीन दिन बिताने का मौका मिला था। आश्रम में रखी विज़िटर्स पुस्तिका पर बहुत से लोग अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। ये लोग दूर दराज के भी थे और काफी आस-पास के परिवेश से भी आए थे। मैंने यहां आने वाले लोगों की टिप्पणी देखी तो यह सहज ही आभास हुआ कि गांधी और उनके विचारों के प्रति आज भी लोगों मे कितनी श्रद्धा और विश्वास है।

वैसे भी आज हमारे देश में या विश्व में जितनी भी बड़ी समस्या दिखाई देती हैं उनका सम्यक समाधान गांधी विचार में मिलता है। उदाहरण के तौर पर वर्तमान समय की एक सबसे बड़ी चुनौती क्लाइमेट चेंज की बताई जा रही है। इसी से जुड़ी हुई बड़ी समस्या दिनोदिन बिगड़ते पर्यावरण और हर तरफ गहराते जल संकट की है। यदि हम पिछली सदी में गांधी विचार का ठीक से अनुसरण करते तब यह समस्याएं इतना विकराल रूप धारण नही करती। गांधी सादगीपूर्ण जीवन यापन पर बहुत जोर देते थे और खुद भी सादगीपूर्ण सात्विक जीवन जीते थे। उनकी मान्यता थी कि पृथ्वी पर हर जीव की आवश्यकता के हिसाब से संसाधन मौजूद हैं लेकिन हमारी धरती एक भी व्यक्ति के अनन्त लालच का पोषण नही कर सकती। एक तरह से गांधी ने लगभग सौ साल पहले हमें बहुत स्पष्ट शब्दों में चेताया था कि प्रकृति का जरूरत से अधिक दोहन प्रकृति सहन नहीं कर सकती।

हमने गांधी की बात ध्यान से नहीं सुनी, उस पर ठीक से अमल नहीं किया। इसका दुष्फल हमारे सामने है। हमारा देश ही नहीं अपितु पूरा विश्व अभूतपूर्व पर्यावरण संकट से जूझ रहा है। इसका समाधान गांधी मार्ग पर चलने से आसानी से हो सकता है। यह काम कड़े कानून बनाने से सम्भव नहीं है। इसके लिए भी गांधी के अहिंसक जन भागीदारी वाले आंदोलन की जरूरत है जिसमें बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित करने होंगे। रोपे गए पौधों का उचित रखरखाव करना होगा और लकड़ी की खपत कम कर जंगल बचाने होंगे। इसी राह से पर्यावरण बचेगा। इसी तरीके से जल संकट टलेगा।

गांधी के बाद भी बहुत से लोगों ने गांधी के विचारों का अनुसरण कर महान काम किए हैं। नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग और आँग सांग सूकी आदि ऐसी प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय हस्तियां हैं जिन्होंने अपने रचनात्मक आंदोलनों का श्रेय गांधी को दिया है। आजादी के बाद हमारे देश में भी बहुत सी विभूतियों ने गांधी विचार अपनाकर कई रचनात्मक कार्यों को अंजाम दिया है। विनोबा भावे का भूदान आंदोलन हो या चंबल के डकैतों का आत्म समर्पण, बाबा आम्टे का कुष्ठ रोगियों को आत्मनिर्भर बनाने के काम आदि में गांधी विचार ही प्रेरक शक्ति था। आज भी देश के विभिन्न हिस्सों में कई संस्था और व्यक्ति अपने स्तर पर अपनी क्षमता के अनुसार गांधी विचार के अनुसार सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

भारत की विशेष सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य में देखें तो आज यह बेहतर समझ में आ रहा है कि क्यों गांधी भारत के लिए यूरोप के शहरी औधोगिकरण के मॉडल को सिरे से अस्वीकार करते थे। वे भारत की नस नस से वाकिफ थे और अपने समकालीनों में संभवतः भारत की जमीनी हकीकत को सबसे बेहतर समझते थे। उन्होंने देश के लिए ग्राम विकास के उस मॉडल की वकालत की थी जिससे देश की अधिसंख्यक ग्रामीण आबादी गांव में रहते हुए अपना आर्थिक विकास कर आत्म निर्भर हो सके।वे बारम्बार यह दोहराते थे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है और गांवों का समग्र विकास किए बगैर भारत का समग्र विकास नहीं हो सकता।

ग्राम विकास पर जोर देने के पीछे गांधी शायद उस स्थिति को भांप रहे थे जिससे आज हमें जूझना पड़ रहा है। गांवों का समुचित विकास नही होने से एक तरफ गांवों से युवाओं का निरंतर पलायन हुआ है जिससे गांव श्रीहीन हो रहे हैं और दूसरी तरफ शहरों में आबादी का दबाव इतना बढ़ गया है कि वहां की व्यवस्थाएं चरमरा रही हैं। महानगरों में जिस तेजी से झुग्गियों की बाढ़ आ रही है वह निकट भविष्य मे थमती दिखाई नहीं देती। गांवों की श्रीहीनता और महानगरों की दुर्दशा का हल भी गांधी विचार में मिलता है। गांधी अपने रचनात्मक कार्यों में गांव के लिए कुटीर उद्योगों को सबसे ज्यादा महत्व देते थे। इससे गांव के युवाओं को गांव में ही रोजगार मिलता था और उन्हें रोजी रोटी के लिए गांव का हरा भरा वातावरण छोड़कर शहर की झुग्गी बस्तियों के दमघोंटू वातावरण में रहने की मजबूरी नहीं होती।

गांधी विचार की एक खासियत यह भी है कि वह ऊपर से देखने में बहुत सरल लगते हैं और साथ ही प्रथम दृष्टया अव्यवहारिक लगते हैं लेकिन जब हम उनकी जड़ तक पहुंचते हैं और मन से अपनाते हैं तब उसका आकर्षण इतना सघन होता है कि हम उसके बाहर नहीं आ सकते।इसे हम देश विदेश घूमकर मल्टी नेशनल कम्पनियों की करोडों की कमाई वाली नौकरियां छोड़कर दूरदराज के इलाके में पांच दस एकड़ जमीन पर जैविक खेती कर जीवन यापन करने का निर्णय लेने वाले प्रबुद्ध वर्ग के लोगों से बात कर समझ

सकते हैं। इन लोगों ने गांव में खेती करने का रास्ता बहुत सोच समझकर सार्थक जीवन जीने के लिए चुना है क्योंकि वहां इन्हें प्रदूषण मुक्त साफ हवा मिल रही है और पेस्टीसाइड रहित जहर मुक्त भोजन मिल रहा है जो स्वस्थ जीवन के लिए सबसे जरूरी है। ऐसा शांतिपूर्ण सुकून का जीवन महानगरों में संभव नही है।दरअसल जाने अंजाने ऐसे लोग अपने लिए गांधी मार्ग ही चुन रहे हैं जो सबसे सुरक्षित और सही मार्ग है।मैंने भी आने वाले समय के लिए यही रास्ता चुना है क्योंकि मुझे भी यही सबसे बेहतर रास्ता नजर आ रहा है।और गांधी के ही शब्दों में "हमे खुद से ही बदलाव की शुरुआत करनी है।"

****

डॉ. राजेंद्र कुमार
आयकर आयुक्त (टीडीएस),
हैदराबाद

सृष्टि का सूत्रधार

यह ऑक्सीजन न होती
यह पत्ते न होते
यह जान न होती
ये पक्षी न होते

क्या विकास का यही मतलब है
कि पेड़ बेज़ार हो जाएं
वहां ईंटों के ढेर पे
एक पेड़ की मज़ार हो जाए

मतलबी होने का यह मतलब नहीं है
कि विकास के नाम पे
वृक्ष तार हो जाएं
भाई अगर रहना ही है तो
पेड़ों के अंदर रहो
पेड़ों के साथ रहो
क्योंकि वृक्ष ही जीवन के सूत्रधार हैं
नि:स्वार्थ ऑक्सीजन देते हैं

हमारा जीवन रक्षक है
हमारे जीवन का स्रोत है
बरसों खड़ा होने के बाद भी
हमारी आने वाली कितनी संतानों को
जीवन का अभय दान देता है

सृष्टि से बंधा हुआ है
सृष्टि का सूत्रधार
सृष्टि का मुख्य द्वार
ईश्वर द्वारा संचालित
ईश्वर का वात्सल्य
इन पेड़ों से प्रफुल्लित होता हुआ
सदैव नि:स्वार्थ जीवन देता है `
आओ, हम वृक्ष को प्रणाम करें
इन्हें हमारे पूर्वजों जैसे सम्मान करें।

** ** **

शालिनी भार्गव कौशल
आयकर आयुक्त, हैदराबाद

नक़ाब रात के चेहरे से

नक़ाब रात के चेहरे से उतर जाने दो
बंद कमरों के दरीचों से सहर आने दो-

ख़ुदा-परस्ती का कभी तो दामन छोड़ो
कभी बुतों से मोहब्बत भी आज़माने दो-

उसकी याद में अभी तो उम्र गुज़री है
उसे भुलाने को कई और मुझे ज़माने दो-

सियाह अंधेरों में उसे पुरसुकून मिलता है
उसकी क़ब्र के चिराग़ों को बुझाने दो-

आज मैं फिर बहारों को मना लाया हूँ
मेरे घर के फूलों को मुस्कुराने दो-

नाख़ुदा के हुनर को भी आज़माने दो
मेरे सफ़ीने को तूफां से टकराने दो-

हम नई राह नया आसमां बनाएंगे
क़ाफ़िलों को उस राह से गुज़र जाने दो-

पड़े हैं कब से मील के पत्थरों की तरह
उन मुर्दा दिलों में लहर जगाने दो-

** ** **

वाल्मीकि शरण ज्योति
आयकर अधिकारी

कौन बता सकता ?

तुम हो कितने महान
कौन बता सकता ?
तुमसे है छोटा, आसमान
कौन बता सकता ?

एक छोटी सी नगरी में
एक लौ जलती है
तुम्हीं जलाये इन दीयों को
दिल ये कहता है
दिल है कितना नादान
कौन बता सकता ?

तुम हो कितने महान
कौन बता सकता ?

अपनी आँखें तो
बस क्षितिज तक जाती है
तेरी सदायें न जाने,
फिर कहाँ से आती है
तुम क्यूँ हो गुमनाम
कौन बता सकता ?

तुम हो कितने महान
कौन बता सकता ?

नदियाँ कैसे जाने
सागर की गहराई
वो तो बहती जाए
लेती हुई अंगड़ाई
जैसे तुमको ढूँढे
तन के ये प्राण

कौन बता सकता ?
तुम हो कितने महान
कौन बता सकता।
*****

शकुंतला गुप्ता
माता किरण गुप्ता, कार्यालय अधीक्षक

दिल की आवाज़

किसी आंगन की कली थी वह
नन्हीं-प्यारी सुंदर फूल की तरह।
उसके हंसने से सब खिल जाते
उसकी आंखों में आंसू मानो आफत थे
उसे डांटना तो दूर, कोई आंख तो दिखाए
पर सबकी लाडली थी, सब खुशी उसको देते
आंखों के सामने रहती तो सब खुश थे
ओझल हो तो, घर उठा लेते सर पे
चारों ओर खोजना शुरू हो जाता
जैसे कोई चीज़ अपने से अलग हो जाता
घर की रौनक थी, सबकी दुलारी थी
सबकी धड़कन थी, तो सांस रुक जाती
गूंजता था घर-आंगन उसकी हंसी से
हर पत्ता-फूल खिलते उसकी मुस्कान से
हर किसी की प्यारी थी, जान थी वह
कोई चाहता न था कभी दूर हो वह
घर में रौनक रहती है उसकी आवाज़ से
उसके चहल पहल और उसकी अठखेलियों से
दिल बैठ जाता है सोचकर, जब दूर कभी वह जाएगी
न जाने किस किस का दिल या जान ले जाएगी
यही दुआ है हमेशा हंसती खिलखिलाती रहे
हम सबके साथ ईश्वर का भी आशीर्वाद रहे।।

** ** **

के. हर्षवर्धन
भाई जयंती दिव्या
कर सहायक

राष्ट्र भाषा हिन्दी

हिन्दी हिन्दी हिन्दी।
राष्ट्र भाषा हिन्दी।।

हिन्दी हिन्दी हिन्दी।
भारत मां की बिंदी।।

एकता ही इसका मूलमंत्र है।
सहयोगी है राजतंत्र में।।

हिन्दी ही है ताकतवारी।
दूर करेगी बेरोजगारी।।

बनाएगा तुझे सदाचारी।
बोली इसकी सबसे प्यारी।।

दूर किया है पारतंत्र को।
दिला दिया है स्वातंत्र को।।

हिन्दी बोलो, हिन्दी सीखो।
हिन्दी भाषा को अपनाओ।।

आओ सब मिलकर गाओ हिन्दी की शान बढ़ाओ।।

** ** **

कमर आलम ख़ान
कर सहायक

ट्रैफिक एंथम

सिग्लन तोड़कर जो तुम जाओगे
जो तुम जाओगे, जो तुम जाओगे
सिग्नल तोड़कर जो तुम जाओगे
बड़ा पछताओगे, बड़ा पछताओगे
बड़ा पछताओगे, बड़ा पछताओगे

बिना हेलमेट, बिना कागज घूमना नहीं
इंश्योरेंस भी करा लेना भूलना नहीं
लम्बे चौड़े चालान कटाओगे, भर नहीं पाओगे
बड़ा पछताओगे.....

ट्रिपलिंग भूलकर भी करना ना कभी
दारु पी के ड्राइविंग करना ना कभी
सीट बेल्ट के लिए भी फाइन खाओगे
नो इंट्री में घुसोगे तो कूटे जाओगे
ओवर ड्राइविंग करते हुए फोन चलाओगे
फिर कटवाओगे, भर नहीं पाओगे

सिग्नल से नजरे चुराने लगे हो
बच-बच के गलियों से जाने लगे हो
जिन सड़को पे उड़ते थे तुम
उनसे भी अब कतराने लगे हो

छुप-छुप के कब तक ऐसे रहोगे
ट्रैफिक पुलिस के जो कभी हाथ लगोगे
थाने में गाड़ियां छोड़के आओगे
बड़ा पछताओगे, बड़ा पछताओगे

सिग्नल तोड़के, जो तुम जाओगे
बड़ा पछताओगे, बड़ा पछताओगे
** ** **

कृष्ण कुमार मीना
आशुलिपिक

" रोती है आज बेटियां "

रोती है आज भी बेटियां इस देश
में, अपनी दुर्दशा पर,
शिकार होती है रोज हजारों बेटियां
यहां, कृरूरत पुरूषों की,
कहीं बेटियां अमानवीय अत्याचार
सह रही है, पुरूषों के,
तो कही जिंदा आग में जलायी जा
रही है, निर्ममता से,
दोयम दर्जे पर ही है आज भी देश
की आधी आबादी,
ना जाने कब बराबरी पर आएंगी
महिलाऐ पुरूषों के,
कुछ भी हो ये जिम्मेदारी हमें उठानी
ही होगी अब तो,
लड़ाई लड़नी ही होगी हमें अपनी माताओं
बहनों, बेटियों की,
ताकि हम बेटियों को उनकी बराबरी का
वो हक दे सके,
जिसकी हकदार सदियों से थी
मेरे वतन की बेटियां ।

** ** **

शंकर मीना,
आशुलिपिक

" प्यारी बिटिया "

सुनो,
ना मारो इस नन्ही कलि को,
वो खूब सारा प्यार हम पर लुटायेगी,
जितने भी टूटे हैं सपने,
फिर से वो सब सजाएगी....!

सुनो,
ना मारो इस नन्ही कलि को,
जब-जब घर आओगे तुम्हे खूब हंसाएगी,
तुम प्यार ना करना बेशक उसको,
वो अपना प्यार लुटाएगी.....!

सुनो,
ना मारो इस नन्ही कलि को,
हर काम की चिंता एक पल में भगाएगी,
किस्मत को दोष ना दो, वो अपना घर
आंगन महकाएगी.....!

ये सब सुन पति
अपनी पत्नी को कहता हैं :-

सुनो,
मैं भी नही चाहता मारना
इस नन्ही कलि को, तुम क्या जानो,
प्यार नहीं हैं क्या मुझको अपनी परी से,
पर डरता हूँ समाज में हो रही रोज-रोज
की दरिंदगी से.....!

क्या फिर खुद वो इन सबसे अपनी लाज बचा पाएगी,
क्यूँ ना मारू में इस कलि को,
वो बहार नोची जाएगी मैं प्यार इसे खूब दूंगा,
पर बहार किस-किस से बचाऊंगा.....!

जब उठेगी हर तरफ से नजरें,
तो रोक खुद को ना पाउँगा,
क्या तू अपनी नन्ही परी को
इस दौर में लाना चाहोगी.....!

जब तड़फेगी वो नजरो के आगे,
क्या वो सब सह पाओगी,
क्यों ना मारू में अपनी नन्ही परी को,
क्या बीती होगी उनपे, जिन्हें मिला हैं ऐसा नजराना,
क्या तू भी अपनी परी को ऐसी मौत दिलाना चाहोगी....!

ये सुनकर गर्भ से आवाज आती है...
सुनो माँ पापा- मैं आपकी बेटी हूँ..
मेरी भी सुनो :-

पापा सुनो ना,
साथ देना आप मेरा,
मजबूत बनाना मेरे हौसले को,
घर लक्ष्मी है आपकी बेटी,
वक्त पड़ने पर मैं काली भी बन जाऊँगी...!

पापा सुनो,
ना मारो अपनी नन्ही कलि को, तुम उड़ान देना मेरे हर वजूद को,
मैं भी कल्पना चावला की तरह, ऊँची उड़ान भर जाऊँगी....!

पापा सुनो,
ना मारो अपनी नन्ही कलि को, आप बन जाना मेरी छत्र छाया,
मैं झाँसी की रानी की तरह खुद ही गैरो से लाज बचाऊँगी....!

पति (पिता) ये सुन कर
मौन हो गया और उसने अपने फैसले पर शर्मिंदगी महसूस करने लगा और कहता हैं...
अपनी बेटी से :-

मैं अब कैसे तुझसे नजरे मिलाऊंगा,
चल पड़ा था तेरा गला दबाने,
अब कैसे खुद को तेरे सामने लाऊंगा,
मुझे माफ़ करना ऐ मेरी बेटी, तुझे इस दुनियां में
सम्मान से लाऊंगा.....!

वहशी हैं ये दुनिया तो क्या हुआ तुझे,
मैं दुनिया की सबसे बहादुर बिटिया बनाऊंगा,
मेरी इस गलती की मुझे है शर्म,
घर-घर जा के सबका भ्रम मिटाऊंगा,
बेटियां बोझ नहीं होती अब सारे समाज में
अलख जगाऊंगा.....!

** ** **

विभागीय उपलब्धियों की एक झलक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति -4 के तत्वधान में दिनांक 20.11.2019 को कार्यालय परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसंधान निदेशालय में आयोजित अर्धवार्षिक बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, हैदराबाद को राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है एवं हिंदी गृह पत्रिका "मधुरिमा" के प्रकाशन हेतु पुरस्कार प्राप्त हुआ है ।

बाएं से दाएं श्री रवि कुमार, उपनिदेशक (राजभाषा), श्री मो. सुलतान, आशुलिपिक, श्री अतुल प्रणय, मुख्य आयकर आयुक्त, श्री एन. शंकरन, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, श्री पीयूष सोनकर, आयकर आयुक्त(प्रशा. एवं करदाता सेवाएं) व राजभाषा अधिकारी, श्री सी. वी. पवन कुमार, अपर आयकर आयुक्त(प्रशा.), एवं श्रीमती वाणी, वरिष्ठ अनुवादक अधिकारी ।

श्री एम.बी. वर्मा, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री सी. वी. पवन कुमार, अपर आयकर आयुक्त (प्रशा) व श्री रवि कुमार, उपनिदेशक(राजभाषा)

आयकर विभाग
INCOME TAX DEPARTMENT
आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना क्षेत्र
ANDHRA PRADESH & TELANGANA REGION
हैदराबाद प्रभार
HYDERABAD CHARGE